International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-08-2022, Accepted: 15-09-2022, Published: 01-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 27-31

सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में हिंदी पत्रिकाओं और अखण्ड ज्योति की भूमिका

किरन[1], नरेन्द्र प्रताप सिंह[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, दे. सं. वि. वि., हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत
[2] विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, दे. सं. वि. वि., हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
सांस्कृतिक चेतना मनुष्य जीवन को परिष्कृत, सम्पन्न, उदार और सर्जनशील बनाने का काम करती है। इसका मुख्य कार्य मानव जीवन को अनूपयोगी क्रियाकलापों के धरातल से ऊपर उठाकर चेतना या बोध की उपयोगी भूमिका में प्रतिष्ठित करना है। यह मानव के चेतनामूलक जीवन एवं व्यक्तित्व को सुंदर, समृद्ध और सार्थक बनाती है। व्यक्तित्व के गौरव और उसकी भव्यता का आधार प्रेम, सहयोग, करुणा, दया, सहानुभूति, साहस, निर्भीकता, कर्मण्यता, विनयशीलता, उदारता तथा कर्म एवं वाणी सौन्दर्य आदि गुण सांस्कृतिक चेतना में होते है। हिंदी पत्रिकाओं ने साहित्य के माध्यम में सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध करके उसे शिखर पर आरूढ़ किया है। इन पत्रिकाओं ने अपने कहानियों, लेखों, निबंधों, संस्मरणों और कविताओं में समाहित सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से पाठक वर्ग को अपने ज्ञान की गंगा से सींचा है व परस्पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान, वैचारिक सामंजस्य एवं बौद्धिक चिंतन के द्वारा मानव को मानव से जोड़ने और मानवीय संवेदनाओं को संरक्षित करने का भी कार्य किया है। सांस्कृतिक चेतना से सम्पन्न इन पत्रिकाओं में आचार–विचार, लोक व्यवहार, मूल्यों, आदर्शों, संवेदनाओं एवं सबंधों में सामंजस्य दिखाई पड़ता है। प्रारंभिक हिंदी पत्रिकाओं में उदन्त मार्तण्ड, बंगदूत, बनारस अखबार, बुद्धि प्रकाश आदि; भारतेन्दु युगीन पत्रिकाओं में कविवचन सुधा, हरि चन्द्र मैग्जीन, हिंदी प्रदीप, ब्राह्मण, बालाबोधिनी, आनन्द कादम्बिनी आदि; द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं में सरस्वती, समालोचक, देवनागर, इंदु, मर्यादा, प्रभा आदि; गांधी युगीन पत्रिकाओं में हरिजन, माधुरी, सुधा, विशाल भारत, हंस, विश्वभारती आदि तथा स्वातंत्रयोत्तर पत्रिकाओं में कादम्बिनी, नवनीत, सुशमा, नन्दन, पराग, अहा! जिंदगी, पाखी आदि ने कहानी, कविता, निबंध, लेख, संस्मरण एवं विविध स्तंभों के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में अहम भूमिका निभाई है। अखण्ड ज्योति पत्रिका सन् 1940 से प्रकाशित होना प्रारंभ हुई। यह मूल रूप से धर्म और अध्यात्म को प्रस्तुत करने वाली पत्रिका के रूप में जाना जाती है लेकिन यह अपने आरंभ से लेकर वर्तमान तक धर्म और अध्यात्म को प्रस्तुत करने के साथ ही जन–सामान्य में सांस्कृतिक चेतना के निर्माण के महत्वपूर्ण दायित्व का भी वहन कर रही है। प्रस्तुत शाोध पत्र में 'सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में हिंदी पत्रिकाओं और अखण्ड ज्योति की भूमिका' को प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्दः सांस्कृतिक, चेतना, निर्माण, हिंदी पत्रिकाएँ, अखण्ड ज्योति

प्रस्तावना

हिंदी पत्रिकाओं ने अपने उद्‌भव काल से ही साहित्य के माध्यम में सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध करके उसे शिखर पर आरूढ़ किया है। इन पत्रिकाओं ने अपने कहानियों, लेखों, निबंधों, संस्मरणों और कविताओं में समाहित सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से पाठक वर्ग को अपने ज्ञान की गंगा से सींचा है व परस्पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान, वैचारिक सामंजस्य एवं बौद्धिक चिंतन के द्वारा मानव को मानव से जोड़ने और मानवीय संवेदनाओं को संरक्षित करने का भी कार्य किया है। जिन परंपराओं, रीति–रिवाजों और मूल्यों पर वि व के जन–जन के भीतर गौरव और अभियान का भाव जग सके, उसी को सांस्कृतिक चेतना कहा जा सकता है। पत्रिकाओं के संदर्भ में सांस्कृतिक चेतना नयी राजनैतिक एवं सामाजिक गतिविधियों की प्रजातांत्रिक प्रतिक्रिया है और सामाजिक वर्ग की नवीन समस्याओं की जटिलतापूर्ण एवं प्रगतिशील अनुक्रिया है। पत्रिकाओं के सामने साम्राज्यवाद, नव–उपनिवेशवाद, साम्प्रदायिकता, अंधराष्ट्रवाद, पुनरुत्थानवाद, आतंकवाद, जातिवाद, नारी उत्पीड़न, पर्यावरण प्रदूशण, भाषा एवं साहित्य विषयक आदि भयावह सांस्कृतिक चुनौतियाँ है, जिनसे निपटने का कार्य भी वे अपने स्तर पर कर रही है।

सांस्कृतिक चेतना को समझने के लिए सांस्कृतिक और चेतना के अर्थ पर विचार करना आवश्यक है– ''सांस्कृतिक भाब्द संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जो मनुश्य की संस्कारशील अवस्था का नाम है। यह उसकी आंतरिक रूचियों को प्रकट करती है तथा उसके मन और मस्तिष्क को परिष्कृतियों की ओर ले जाती है।''[1] मानक हिंदी कोश के अनुसार, ''सांस्कृतिक शब्द विशेषण है जो संस्कृत भाषा के शब्द संस्कृति में ठञ् और इक प्रत्यय के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है– संस्कृति से संबंध रखने या संस्कृति के क्षेत्र में आने या होने वाला।''[2] संस्कृति मनुष्य को मानवता की ओर प्रेरित करने वाले आदर्शों, आचार–विचारों और कार्य अनुष्ठानों की समष्टि का नाम है। इसमें सांस्कृतिक शब्द का परिवेश उतना ही विस्तृत, व्यापक एवं विशाल है जितनी की मानव समाज की आवश्यकताएँ, अभिरुचियाँ एवं महत्वाकांक्षाएँ। इसमें अतीत से लेकर वर्तमान तक की विस्तृत पृष्ठभूमि को आधार बनाकर रचनाकार अपने कलात्मक वर्णन का रेखांकन करता है। इसका लक्ष्य जनसामान्य को अनूपयोगी क्रिया–कलापों के धरातल से ऊपर उठाकर युगबोध की भूमिका में प्रतिष्ठित करना है। इसके विषय में डॉ. गोविंद पाण्डेय कहते है कि, ''संस्कृतियाँ जहाँ एक ओर अपने आदर्श को सार्वभौम मानती है वहाँ दूसरी ओर वे अपनी सत्ता को विशिष्ट समाज और जाति में समाविष्ट करती है।'' लेकिन वास्तविक रूप से इनका संबंध मनुष्य के विचारों, धार्मिक विश्वासों, जीवन मूल्यों तथा गुणों से है। ''चेतना बड़ा ही व्यापक है। उसे बोध या चैत्य के समानार्थक शब्द के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। 'चेतना' प्राणिमात्र में रहने वाला वह तत्व है, जो उन्हें निर्जीव, जड़ पदार्थों से भिन्न बनाता है और उन्हें चैतन्य बनाकर जीवधारी सिद्ध करता है। चेतना स्वयं को और अपने आस–पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।''[3] मानक हिंदी कोश के अनुसार, ''चेतना स्त्रीलिंग और संस्कृत भाषा का शब्द है। इसके प्रमुख अर्थ इस प्रकार है– 1 मन की वह वृत्ति या

भाक्ति जिससे जीव या प्राणी को आंतरिक (अनुभूतियों, भावों, विचारों आदि) और बाहय (घटनाओं) तत्वों या बातों का अनुभव या भान होता है। होश–हवास। 2 बुद्धि। समझ। 3 मनोवृत्ति, विशेषतः ज्ञानमूलक मनोवृत्ति। 4 याद। स्मृति।''[4] चेतना ऐसे मस्तिष्क का गुण धर्म है, जो भौतिक विश्व क साथ अन्योन्य क्रिया करता है। उच्च विकसित पदार्थ की बाह्य विश्व को बौद्धिक बिंबो के रूप में परिलक्षित करने की योग्यता ही चेतना है। उसी के द्वारा मनुष्य अपने चारों ओर के विश्व की जानकारी प्राप्त करता है और अपने व्यावहारिक क्रिया–कलाप को उद्देश्य से युक्त बनाता है।

''सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित धार्मिक भावना एवं दार्शनिक चिंताधारा के माध्यम से होती है। कला, शिल्प, साहित्य और संगीत इन्हीं की आनुशंगिक उपलब्धियॉ है। इन सबका क्षेत्र विशाल मानव समाज है, जिसकी प्रेरणा एवं प्रसाद से मनुष्य जीवन यापन करता है।''[5] सांस्कृतिक चेतना सर्वप्रथम मानव के अन्तःकरण में प्रस्फुटित होती है, जो आंतरिक अनुभूति से सम्बद्ध है, जिसमें मन और हृदय की पवित्रता निहित है। इसके बाहय पक्ष के अन्तर्गत जहाँ उत्सव, मेले, परिधान, आहार, विवाह, मनोरंजन, संगीत, चित्र, वास्तु एवं मूर्ति कलाओं आदि का चित्रण किया जाता है वहाँ आंतरिक पक्ष में मनुश्य के आद ार्वादी दृष्टिकोण, शिष्टता, सज्जनता, मानवता, भील आदि पर प्रकाश डाला जाता है। अतः परंपरा से चली आती हुई संकीर्ण सांप्रदायिक भावनाओं, धार्मिक कटुताओं और विशमताओं को दूर करने तथा राष्ट्र में एकात्मकता की भावना फैलाने के लिए संस्कृति के ऐसे–ऐसे आदर्श चरित्रों और घटनाओं को चित्रित करना जो वर्तमान की अनके समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सके, उसे सांस्कृतिक चेतना कहते है।''

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हिंदी के प्रथम पत्र उदन्त मार्तण्ड प्रका ान 30 मई 1826 को कलकत्ता से हुआ। इसके संस्थापक एवं संपादक कानपुर निवासी युगलकिशोर शुक्ल थे। इस पत्र में सरकारी कर्मचारी की नियुक्ति, तबादले, सरकारी विज्ञप्तियाँ, बाजार–भाव तथा देश–विदेश के कुछ समाचार छपते थे। इस अखबार की भाषा खड़ी बोली थी, जिसे मध्यदेशीय भाषा कहा गया। लगभग डेढ़ वर्ष तक चलने वाला यह साप्ताहिक सूर्य 4 दिसंबर 1827 ई. को अस्त हो गया– ''आज दिवस लौ उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त। अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।''[6] बंगदूत 10 मई 1829 को प्रकाशित हुआ, जो राजाराम मोहन राय के विचारों को प्रचारित करता था। यह चार भाषाओं में निकलता था, जिसमें हिंदी भाषा में भी सामग्री प्रकाशित होती थी। सन् 1854 में कलकत्ता से दैनिक पत्र के रूप में समाचार सुधावर्शण का प्रकाशन हुआ। हिंदी प्रदेश से प्रकाशित होनेवाला प्रथम हिंदी साप्ताहिक पत्र बनारस अखबार है। यह जनवरी 1845 में गोविंद रघुनाथ धते के संपादन में बनारस से राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद द्वारा प्रकाशित किया गया। सन् 1852 में मुंशी सदासुखलाल के संपादन में आगरा से बुद्धि प्रकाश पत्र निकला, जिसके लेखों की स्तरीयता और भाशिक गुणवत्ता की प्रशंसा आचार्य रामचन्द्र भाुक्ल ने भी की है। इस प्रकार प्रारंभिक काल के पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी भाशा को लेखन का माध्यम बनाकर भारतीय समाज, संस्कृति एवं साहित्य को उन्हीं की भाषा में प्रस्तुत करने का महनीय प्रयास किया है। जिसके द्वारा सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का कार्य स्वतः ही होता चला गया है।

''हिंदी साहित्य के भारतेन्दु युग में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का विकास तेजी से हुआ। इस युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरि चन्द्र ने 15 अगस्त 1867 को काशी से कविवचन सुधा का प्रकाशन आरंभ किया। कविवचन सुधा अर्थात् कवियों के मुख से निकली हुई अमृत समान वाणी (कविता)। इस पत्रिका का आदर्श वाक्य– ''तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतवाणी सब कहै'' है।[7] इसमें अनेक प्राचीन और नवीन कवियों की कविताओं को संकलित संपादित किया गया एवं आधुनिक विषयों पर इसमें कई लेख भी प्रकाशित हुए। इसमें साहित्य के साथ समाचार, यात्रा, ज्ञान–विज्ञान, धर्म, राजनीति एवं समाजनीति विशयक लेख भी छपें। भारतेन्दु ने इसके अतिरिक्त हरि चन्द्र मैग्जीन, हरि चन्द्र चन्द्रिका और बालबोधिनी पत्रिका का भी संपादन किया। पं. बालकृश्ण भट्ट के संपादकत्व में मासिक पत्रिका हिंदी प्रदीप का प्रका ान सन् 1877 में प्रयाग से आरंभ हुआ। यह साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक पत्रिका थी, जिसका आदर्श वाक्य भारतेन्दु हरि चन्द्र ने लिखा– भाुभ सरस देश सनेह पूरित, प्रकट है आनंद भरै। वचि दुसह दुरजन वायुसों माणि दीप समचिर नहिं हरै।। सूझे विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै। हिंदी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै।।''[8] इसके प्रत्येक अंक में ''विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास, साहित्य, दर्शन, राज संबंधी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहली को छपता है'' लिखा रहता था। इसने भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रसार किया। इसमें पुस्तक समीक्षा, कहानी, निबंध और नाटक के धारावाहिक प्रकाशित होने के साथ बाल विवाह, नारी शिक्षा आदि कई सामाजिक रूढ़ियों पर लेख छपे। ब्राह्मण पत्रिका के संपादक पं. प्रताप नारायण मिश्र थे। इसका पहला अंक 15 मार्च सन् 1883 में कानपुर से निकला। इस पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर बने अर्द्धचन्द्र में 'शत्रोरपि गुणावाच्या दोशावाच्या गुरोरपि' लिखा रहता था। इसमें साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा भाशा विशयक लेख प्रकाशित होते थे। इस युग की पत्रिकाओं पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व की अमिट छाप दिखाई देती है। पत्रों में न केवल भाशा, साहित्य पर निखार हुआ वरन् इसमें सांस्कृतिक चेतना भी प्रस्फुटित हुई। इस युग में पत्रकारिता का विकास कई दि ाओं हुआ। सामजिक, राजनीतिक और साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं के अतिरिक्त सांस्कृतिक पृश्ठभूमि पर आधारित पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुई। भारतेन्दु तथा उनके समकालीनों ने साहित्यिक की नहीं, वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पक्षों को भी सशक्त ढ़ंग से प्रस्तुत किया।

''द्विवेदी युग की प्रमुख पत्रिका सरस्वती का प्रकाशन 1900ई. में काशी से हुआ। यह पत्रिका इंडियन प्रेस प्रयाग और काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सहयोग से निकाली गई। इसके प्रका ाक इंडियन प्रेस प्रयाग के मालिक चिंतामणि घोश थे। पत्रिका के प्रारंभिक वर्श में उसके संपादक मंडल में सदस्य– राधाकृश्ण दास, भयामसुन्दर दास, कार्तिक प्रसाद, कि ोरीलाल गोस्वामी एवं जगन्नाथदास रत्नाकर थे। श्री घोश ने सन् 1902 में सरस्वती का संपादक भयामसुन्दर दास को बनाया। उनके बाद सन् 1903 में सरस्वती के संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी नियुक्त किये गये। एवं इसी वर्श से पत्रिका प्रयाग से प्रकाि ात होने लगी।''[9] आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यम से हिंदी भाशा को परिश्कृत करके उनका मानकीकरण किया। गद्य के साथ–साथ पद्य लेखन में भी खड़ी बोली हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग पर जोर दिया, लेखन के क्षेत्र में नए–नए प्रतिभाओं की खोज की, साहित्यकारों को आद ार्वादी साहित्य सृजन की प्रेरणा प्रदान की, संपादकीय टिप्पणियों में विशय वैविध्य तथा अंग्रेजी एवं भारतीय भाशाओं में प्रकाि ात पत्रिकाओं की जानकारियों को हिंदी में सुलभ कराने का कार्य किया। इस प्रकार सरस्वती हिंदी भाशा और साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाने वाले अपने समय की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है।

मासिक पत्र समालोचक का प्रकाशन सन् 1901 मे जयपुर से प्रारंभ हुआ। इसके संपादक पं. चन्द्रधर भार्मा गुलेरी थे। पं. गुलेरी के संपादन में समालोचक ने हिंदी जगत में अपनी एक अमिट छाप बनायी। इस पत्रिका में पत्रों में दिये गये विचारों पर कटु

कटाक्षपूर्ण समालोचना के अतिरिक्त पुस्तकों की भी समालोचना का एक स्तंभ रहता था। मासिक पत्रिका देवनागर का प्रकाशन सन् 1907 में 'एक लिपि विस्तार परिशद्' के तत्वावधान में हुआ। इसके संपादक यशोदानंदन अखौरी और संचालक जस्टिस भारदाचरण मित्र थे, जिन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, व्यापकता एवं व्यावहारिकता को समझकर उसे भारतीय भाषाओं की सामान्य लिपि बनाने के पक्ष में थे। इसी कारण इस पत्रिका का प्रकाशन भारतीय पत्रकारिता में एक नवीन प्रयोग माना गया। इसके मुख्य पृष्ठ पर आदर्श वाक्य छपता था, जो इस प्रकार है– ''भारतीय चित्र–विचित्र भाषाओं के लेखों से विभूषित एक अद्वितीय सचित्र मासिक पत्रिका।''[10] देवनागर मूलतः सांस्कृतिक पत्रिका थी। इसमें भाषा, साहित्य, धर्म, राजनीति, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों पर लेख प्रकाशित होते थे। इसमें प्रत्येक भारतीय भाषाओं की रचनाएँ देवनागरी लिपि में छपती थी। इसका उद्देश्य एक लिपि के प्रचार द्वारा जातीय एकता की प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक उन्नयन अर्थात् भारत में एक लिपि का प्रचार बढ़ाना था और वह एक लिपि देवनागराक्षर है। साहित्यिक मासिक पत्रिका इंदु सन् 1909 में काशी से निकलना प्रारंभ हुई। इसके आदि संपादक अंबिका प्रसाद गुप्त थे। बाद में जयशंकर प्रसाद इसके संपादक बने। प्रसाद ने इंदु के प्रवेशांक में साहित्य के संबंध में लिखा था, ''साहित्य स्वतंत्र प्रकृति, सर्वतोगामी प्रतिभा के प्रकाशन का परिणाम है, वह किसी भी परतंत्रता को सहन नहीं कर सकता। संसार में जो कुछ सत्य और सुन्दर है वही साहित्य का विशय है।'' इस पत्रिका के माध्यम से प्रसाद का साहित्य जगत में प्रवेश हुआ। ''श्री कालूराम गंगराडे ने मासिक पत्रिका प्रभा का प्रकाशन सन् 1913 में खण्डवा, मध्यप्रदेश से किया। माखनलाल चतुर्वेदी इसके संपादक थे।''[11] देवदत्त भार्मा के संपादकत्व में सन् 1917 से इसका प्रका ान श्री गणेश भांकर विद्यार्थी द्वारा प्रताप प्रेस कानपुर से होने लगा। यह विविध विशयों से युक्त पत्रिका थी। देवदत्त भार्मा के बाद गणेशशंकर विद्यार्थी, श्रीकृश्णदत्त पालीवाल, माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृश्ण भार्मा नवीन ने इसके संपादन का कार्य किया। इसके विशय में बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखा है, ''प्रभा भारत की देशी–विदेशी भाषाओं के श्रेष्ठ मासिक पत्रों में से एक है। इसमें मूर्धन्य विद्वानों के अनुसंधानपरक लेख व विचार प्रकाशित होते रहे है तथा इसके संपादकीय विचार, टिप्पणियॉ आदि अत्यन्त उपादेय और समयोचित होते है।''

''प्रसिद्ध धार्मिक मासिक पत्रिका कल्याण का प्रकाशन अगस्त, 1926 में मुंबई से आरंभ किया गया। एक वर्श पश्चात् यह पत्रिका गीता प्रेस, गोारखपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित होने लगी। तब से लेकर आज तक यह वहीं से निकलती है। इसके प्रथम संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार थे। उनके बाद चिमनलाल गोस्वामी, स्वामीराम सुखदास, मोतीलाल जालान इसके संपादक के रूप में कार्य किये।''[12] इसके प्रमख लेखकों में सुदर्शन सिंह चक्र, जयदयाल गोयंदका आदि रहे है। कल्याण के वर्तमान संपादक श्री राधे याम खेमका और सह–संपादक डॉ. प्रेमप्रकाश कक्कड़ है। इसके प्रथम संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार ने पत्रिका के प्रवेशांक में इसके उद्देश्य के विषय में लिखा है कि, ''इस कल्याण के द्वारा यथासंभव उन प्रातः स्मरणीय ऋषि मुनियों और महापुरूषों की दिव्य वाणी का ही प्रचार किया जाय जो अपने अलौकिक तेज से पथभ्रष्ट पथिकों को कल्याण के सुन्दर मार्ग पर लाने में समर्थ है।'' कल्याण धार्मिक, नैतिक, पौराणिक, दा ैनिक सामग्री को प्रकाशित करने वाली अनूठी पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य जनता को अध्यात्मिक, शिक्षाप्रद, चारित्रिक सामग्री प्रदान करना है। यह पत्रिका नैतिक शिक्षा से संबंधित पहलुओं पर बारीकी से अध्ययन करके इस पर लेख, कहानी व संस्मरण छापती है। अतः कल्याण पत्रिका मूल रूप से आध्यात्मिक है एवं हिंदू धर्म के विभिन्न दृष्टिकोणों का अधिक विस्तृत विवरण देती है।

विश्णुनारायण भार्गव द्वारा मासिक पत्रिका माधुरी का प्रका ान 30 जुलाई 1922 में लखनऊ के नवलकि ाोर प्रेस से किया गया। इसके संपादक दुलारेलाल भार्गव और रूपनारायण पाण्डेय थे तथा शिवपूजन सहाय, प्रेमचंद, बाके बिहारी भटनागर, मातादीन भुक्ल, रामसेवक त्रिपाठी ने भी पत्रिका के संपादन का कार्य किया। इसके मुख्य पृश्ठ पर दुलारेलाल भार्गव रचित यह दोहा छपता था– ''सीता, मधुर मधु, सुधा तिय–अधर–माधुरी धन्य। पै नव रस–माधुरी की यह माधुरी अनन्य।।''[13] सुधा पत्रिका का प्रका ान अगस्त सन् 1927 में लखनऊ से हुआ। इसके संपादक दुलारेलाल भार्गव और पं.रूपनारायण पाण्डेय थे। इसके आवरण पृश्ठ पर सिद्धांत वाक्य के रूप में 'कीन्हेहु सुलभ सदा वसुधा हूँ' छपता था। इसका उद्देश्य ''सत्साहित्य का सृजन करके उसका प्रचार–प्रसार करना, उच्च कोटि के विविध– विशय के मौलिक लेखों का प्रकाशन, अनेक भाषाओं के साहित्य से विविध विषयों की सामग्री को लेकर हिंदी साहित्य को समृद्ध करना, पुराने लेखकों के अनुभव और ज्ञान को पाठकों के सामने रखना, उदीयमान लेखकों की प्रतिभा को निखारना, प्र ांसनीय कृतियों को पुरस्कृत करना एवं प्राचीन साहित्य को सबके सन्मुख लाना था।''[14]

''रामानन्द चाटोपाध्याय ने सन् 1928 में कलकत्ता से विशालभारत नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। इसके संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे।''[15] पं. चतुर्वेदी के संपादन में विशाल भारत हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बनी। सन् 1937 में पं. चतुर्वेदी के आग्रह पर विशाल भारत का संपादन करने के लिए सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' कलकत्ता आये। यह साहित्यिक, सामाजिक एवं राजनीतिक पत्रिका थी। इसका लक्ष्य सामयिक साहित्य पर प्रभाव डालना एवं नया लेखक वर्ग तैयार करना भी था। मुंशी प्रेमचंद ने हंस पत्रिका का प्रकाशन मार्च 1930 में काशी से प्रारंभ किया। हंस के प्रथम अंक में उसे विविध विशयों से संपन्न कहानियों की मासिक पत्रिका घोषित किया गया। इस पत्रिका के उद्देश्य के विशय में इसके प्रथम अंक में मुंशी प्रेमचंद ने लिखा था, ''हंस के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि इसका जन्म ऐसे अवसर पर हुआ है, जब भारत में एक नए युग का आगमन हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है। इस तिथि की यादगार एक दिन देश में कोई विशाल रूप धारण करेगी। बहुत छोटी–छोटी तुच्छ विशयों पर बड़ी–बड़ी भानदान यादगारें बन चुकी है। इस महान विजय की यादगार हम क्या और कैसे बनायेंगे, यह तो भविष्य की बात है।''[16] विश्वभारती पत्रिका का प्रकाशन सन् 1942 में कलकत्ता के शांतिकनकेतन से किया गया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक थे और 1947 तक इसे निकालते रहे। इन्होंने वि वभारती पत्रिका के माध्यम से रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य से हिंदी जगत को परिचित कराया। आचार्य द्विवेदी ने पत्रिका के प्रथम अंक के संपादकीय में लिखा था, ''देश आज किस प्रकार नाना भाँति की संकीर्णताओं का शिकार बनता जा रहा है। उससे रक्षा पाने का सर्वोत्तम उपाय साहित्य ही है।''

आजादी के बाद हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की संख्या और गुणवत्ता में आशातीत प्रगति हुई। हिंदी की कई पत्रिकाओं जैसे कल्याण, अखण्ड ज्योति, कादंबिनी, पराग, नवनीत, अहा! जिंदगी, पाखी आदि अपने सामग्रियों विषयवस्तु, सामग्री एवं भाशा के माध्यम से भारतीय समाज के सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में योगदान दे रही है। ''कादम्बिनी एक साहित्यिक–सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है। इसका प्रका ान हिंदुस्तान टाइम्स द्वारा नवंबर 1960 में इलाहाबाद से शुरू किया गया। बाद में यह दिल्ली से प्रकाशित होने लगी। इसके आदि संपादक बालकृश्ण राव थे। सन् 1962 में इसके संपादक रामानन्द दोषी बने तथा उन्होंने सन् 1972 तक पत्रिका को संवारकर उसे स्तरीय पत्रिका बनाया। सन् 1972 के

बाद उसके संपादक राजेन्द्र अवस्थी बने।''[17] वर्तमान में इसके ''प्रधान संपादक भाषि भोखर है तथा सहयोगी एवं सहायक संपादक क्रमशः राजीव कटारा एवं अरूण कुमार जैमिनि है। इसमें पत्रिका के नाम के नीचे 'आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्शतु' लिखा रहता है।''[18] इसमें निबंध, कहानियाँ, लेख कविताएँ, गज़ल, गीत, संस्मरण, रेखाचित्र आदि के साथ साहित्यिक एवं चिंतनपरक आलोचनात्मक लेख भी प्रकाशित होते है। इस पत्रिका में समय–समय पर कई तरह के स्तंभ निकलते रहे है। जनवरी 2020 में निकले इसके स्तंभ आवरण कथा, कहानी, उपन्यास अंश, कविताएँ, अतीत के पन्नों से, मंच, पहला कदम, किताबें, कादम्बिनी क्लब, मतांतर, व्यंग्य, हंसी–दिल्लगी, एलोपैथी, आयुर्वेद, माइंड गेम, भविष्य और शब्द है। यह महत्वपूर्ण अवसरों पर विशेष सामग्री पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है तथा समयानुसार अपने स्तंभों को बदलती रहती है।

''नवनीत साहित्यिक व सांस्कृतिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन श्री गोपाल नेवटिया ने सन् 1952 में बंबई से प्रारंभ किया। इसके प्रारंभिक संपादक रतनलाल जोशी व सत्यकाम विद्यालंकार थे। इसके बाद क्रमशः नारायण दत्त और गिरिजा भांकर तिवारी इसके संपादक बने।''[19] नवनीत बाद में भारतीय विद्याभवन की मासिक पत्रिका भारती से संयुक्त हो गई। यह नवनीत प्रका ान द्वारा लिमिटेड वेंकटे वर प्रेस, बंबई से मुद्रित व प्रकाशित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन व नवीन ज्ञान–विज्ञान की रोचक सामग्री पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना है। इसमें प्रकाशित सामग्री जीवन आस्थाप्रद होती है। यह पत्रिका कहानियाँ, कविताएँ, गज़ल, लेख, निबंध, प्रेरक प्रसंग आदि के साथ विभिन्न भाशाओं की कहानियों व उन्यासों का हिंदी रूपान्तर भी प्रकाशित करती है। इसके लेखों में आत्मबोध और अस्मिता की महक रहती है। भाषा की दृष्टि से भी यह पत्रिका उपयोगी है। इसमें प्रकाशित लेख विचारोत्तेजक एवं कहानियाँ हृदयस्पर्शी होती है। अहा! जिंदगी पत्रिका का प्रकाशन सितंबर 2004 से प्रारंभ हुआ। यह एक साहित्यिक– सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है जो दैनिक भास्कर समूह द्वारा जयपुर राजस्थान से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका के प्रथम संपादक यशवंत व्यास रहे और उनके साथ संपादकीय टीम में मोनिका जोशी और रेणु खंतवाल रही। ''वर्तमान में इसकें संपादक आलोक श्रीवास्तव और सहायक संपादक देवाशीश प्रसून है। इनके साथ संपादकीय टीम में गीता यादव एवं अरूण लाल कार्यरत है। पत्रिका के नाम के नीचे लिख रहता है– 'सकारात्मक जीवन की सर्वप्रिय पत्रिका'।''[20] इस पत्रिका में लेख, कहानियॉ, कविताएँ, संस्मरण, पुस्तक समीक्षा आदि प्रकाशित होते है। इस पत्रिका मे निकलने वाले स्तंभों में नमस्कार, अहा! अतिथि, आवरण कथा, कविता, इतिहास के पन्ने, कहानी, जिंदगी का प्रेमराग, ये जीवन है, आनन्दम्, जीवन रेखा, अपना पैसा, चित्र पहेली, आशीर्वाद, पाठकों के नोटबुक, आखर अनंत, ब्रेक टाइम, जीवन चलने का नाम, आपकी चिट्ठियॉ आदि है। इस पत्रिका के स्तंभों में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार अहा! जिंदगी पत्रिका का उद्देश्य जीवन के सकारात्मक पहलुओं को प्रकाशित करना है और यह अपने सकारात्मक चिंतन के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करके हिंदी साहित्य जगत को भी आलोकित करने का कार्य कर रही है।

''पाखी एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन सितंबर 2008 में इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी द्वारा नोयडा (उ.प्र.) से प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ.प्र.) से सहयोग प्राप्त है।''[21] पत्रिका के संस्थापक एवं प्रथम संपादक अपूर्व जोशी है। अक्टूबर 2010 से मार्च 2019 तक प्रेम भारद्वाज इसके संपादक रहे। अप्रैल 2019 से अपूर्व जोशी पुनः पत्रिका के संपादन कार्य को कर रहे है। श्री जोशी के साथ प्रशिक्षु उपसंपादक जागृति सौरभ सहयोगी के रूप में नियुक्त है। पत्रिका के व्यवस्थापक अमित कुमार व पृष्ठ सज्जाकार मनोज चौधरी है। इसके प्रवेशांक का लोकार्पण हिंदी के वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह ने किया था। इसमें कहानी, कविता, लेख, उपन्यास अंश, आलोचना आदि छपते है। इसमें निकलने वाले स्तंभों में हाशिए पर हर्फ, कहानी, कविता, लेख, उपन्यास अंश, मूल्यांकन, अवाक्, सृजन–संदर्भ, खबरनामा, आपका पन्ना आदि है। इसका संपादकीय हाशिए पर हर्फ शीर्षक स्तंभ के अन्तर्गत प्रकाशित होता है, जिसकी विषयवस्तु समसामयिक होती है। इस प्रकार पाखी विविध स्तंभों में प्रकाशित सामग्रियों के माध्यम से हिंदी साहित्य के प्रति लोगों की रूचि को जागृत कर सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का भी कार्य कर रही है।

अखण्ड ज्योति पत्रिका सर्वप्रथम सन् 1938 में छपी तथा जनवरी 1940 से नियमित रूप से प्रकाशित होना आरंभ हुई। पत्रिका के संस्थापक पं. श्रीराम भार्मा आचार्य ही इसके संपादक एवं प्रकाशक भी थे।[22] जनवरी, 1941 अंक में इसका आदर्श वाक्य था– ''सुधा बीज बोने से पहले, कालकूट पीना होगा। पहिन मौत का मुकुट, वि वहित मानव को जीना होगा।''[23] वर्श 1941 के फरवरी अंक से यह मथुरा से प्रकाि ात होने लगी। पत्रिका के उद्देश्य के विषय में आचार्य श्रीराम भार्मा फरवरी अंक में लिखते है कि, ''अखण्ड ज्योति का उद्देश्य मनुष्य समाज में सदाचार, धर्मनिष्ठा, मातृभाव और सुख भ्ाांति के विचारों का प्रचार करना है।'' साज सज्जा की दृष्टि से अखण्ड ज्योति प्रथम अंक से ही आकर्शण का केन्द्र बनी है। इसके प्रवेशांक के आवरण पृष्ठ पर चक्रधारी भगवान श्रीकृष्ण का चित्र छपा। यह पत्रिका प्रारंभ से ही हिंदी भाषा के मानक रूप को प्रस्तुत करती रही है। पत्रिका के मानकीकरण के विषय में आचार्य शर्मा ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से पत्रिका को प्रकाशित करने के पूर्व उनसे मार्गदर्शन के लिए मिलने के समय कहा था कि, ''मैं आपकों विश्वास दिलाता हूँ कि अखण्ड ज्योति का लेखन हमेशा हिंदी भाषा के संस्कारित व परिमार्जित स्वरूप को ही प्रस्तुत करता रहेगा।''[24] प्रकाशन में नियमितता, विज्ञापन का निषेध, भाषा के मानक रूप का प्रयोग, गंभीर लेखों के साथ प्रेरक प्रसंग एवं कहानियों का समायोजन, लेखों में किसी का नाम न होना, बालक, युवा एवं वृद्ध सभी के लिए उपयोगी, लेखों में ज्ञान–विज्ञान, धर्म, दर्शन, संस्कृति, अध्यात्म व विज्ञान की जानकारी, राष्ट्र व समाज निर्माण संबंधी जानकारी आदि इस पत्रिका की प्रमुख विशेषता है। यह अपने स्तंभों में सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, आर्थिक, तकनीकी, साहित्यिक, धार्मिक, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद आदि विविध विषयों से संबंधित लेख प्रकाशित करती है। अखण्ड ज्योति पत्रिका अपने लेखों के माध्यम से सांस्कृति चेतना के विविध पक्ष को जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर रही है। यह पत्रिका आधुनिक युग की सांस्कृतिक विचारधारा की प्रत्यक्ष साक्षी है। इसका उद्भव एवं उत्कर्ष उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों के लिए हुआ है तथा यह इन मूल्यों के स्थापन के लिए निष्ठामग्न है। यह पत्रिका अपने लेखों, लघु कथाओं एवं कविताओं के माध्यम से सांस्कृतिक परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य कर रही है तथा इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री अत्यन्त संपन्न एवं कला की दृष्टि से पूर्ण है।

निष्कर्ष

हिंदी में सांस्कृतिक पत्रकारिता समस्त पत्रकारिता की भावभूमि की जड़ है। पत्रकारिता को साहित्य, सांस्कृतिक एवं समस्त मूल्यों का रस सांस्कृतिक पत्रकारिता से ही मिलता है। ''सांस्कृतिक पत्रकारिता की मूल पहचान तो राष्ट्रभाषा ही है। लोहिया का विचार था कि अंग्रेजी देश को तोड़ रही है और जब तक अंग्रेजी रहेगी यह मुट्ठीभर जादू टोना सी करने वालों की भाषा देश को सांस्कृतिक अखण्डता नहीं दे सकती।'' इस प्रकार सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में हिंदी पत्रिकाएँ उदन्त मार्तण्ड, बंगदूत,

कविवचन सुधा, हिंदी प्रदीप, सरस्वती, हंस, कल्याण, कादम्बिनी, नवनीत, अहा! जिंदगी, पाखी और अखण्ड ज्योति आदि ने हिंदी भाशा एवं साहित्य के माध्यम सराहनीय भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं ने हिंदी भाशा को आधार बनाकर उनके प्रकाशित होने वाली विभिन्न सामग्रियों के माध्यम से राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, डॉ. रमेश चन्द्र (2002), पत्रकारिता के सिद्धांत, नई दिल्लीः नमन प्रकाशन, पृ.सं. 143।
2. वर्मा, रामचन्द्र व कपूर, बदरीनाथ (संपा.), (2007), मानक हिंदी कोश, खण्ड–5, प्रयागः हिंदी साहित्य सम्मेलन, पृ.सं. 329।
3. त्रिपाठी डॉ. रामप्रसाद (संपा.), हिंदी विश्वकोश, भाग–4, पृ. सं. 182।
4. वर्मा, रामचन्द्र व कपूर, बदरीनाथ (संपा.), (2006), मानक हिंदी कोश, खण्ड–2, प्रयागः हिंदी साहित्य सम्मेलन, पृ.सं. 274।
5. नगेन्द्र, डॉ. (संपा.), (2016), हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली : मयूर पेपरबैक्स, पृष्ठ–91।
6. तिवारी, डॉ. अर्जुन (2013) हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 88।
7. तिवारी, डॉ. अर्जुन (2013) हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 103–104।
8. भार्मा, राम अवतार (2007), हिंदी पत्रकारिता और साहित्य, नई दिल्ली नमन प्रकाशन, पृ.सं. 25।
9. यादव, चन्द्रदेव (2003), हिंदी पत्रकारिताः स्वरूप एवं संरचना, दिल्ली : ग्रंथलोक, पृ.सं. 278।
10. तिवारी, डॉ. अर्जुन (2013) हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 175।
11. यादव, चन्द्रदेव (2003), हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप एवं संरचना, दिल्ली : ग्रंथलोक, पृ.सं. 282।
12. पंत, एन.सी. (2002), पत्रकारिता का इतिहास, नई दिल्ली : तक्षि ाला प्रकाशन, पृ.सं. 188।
13. त्रिपाठी, डॉ. रमेश चन्द्र (2002), पत्रकारिता के सिद्धांत, नई दिल्ली : नमन प्रका ान, पृ.सं. 137।
14. त्रिपाठी, डॉ. रमेश चन्द्र (2002), पत्रकारिता के सिद्धांत, नई दिल्ली : नमन प्रकाशन, पृ.सं. 139।
15. यादव, चन्द्रदेव (2003), हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप एवं संरचना, दिल्ली : ग्रंथलोक, पृ.सं. 287।
16. प्रेमचंदः हंस, मार्च, 1930, हंसवाणी।
17. पंत, एन.सी. (2002), पत्रकारिता का इतिहास, नई दिल्ली : तक्षि ाला प्रकाशन, पृ.सं. 196।
18. भोखर, भाशि, (संपा), कादम्बिनी, नई दिल्ली, फरवरी, 2020, पृ.सं. 4।
19. पंत, एन.सी. (2002), पत्रकारिता का इतिहास, नई दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, पृ.सं. 192।
20. श्रीवास्तव, आलोक (संपा.), अहा! जिंदगी, जयपुर, सितंबर, 2016, पृ.सं. 4।
21. भारद्वाज, प्रेम (संपा.), पाखी, नोएडा, जून, 2018, पृ.सं. 1।
22. पंकज, विष्णु (2009), हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा, जयपुर, ने नल पब्लिशिंग हाउस, पृश्ठ संख्या–135।
23. शर्मा, आचार्य श्रीराम, अखण्ड ज्योति, आगरा, जनवरी, 1941, मुख्य पृष्ठ।
24. शर्मा, आचार्य श्रीराम, अखण्ड ज्योति, मथुरा, फरवरी, 2013, पृ.सं. 6।